JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा की प्रासंगिकता

Relevance of Teacher Education in Present Time

हर्षिता सिंह,
शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग
सिद्धार्थ विष्वविद्यालय, कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर।

शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षक का जो सम्मान पहले था वह आज नहीं है। समय की गति के साथ उसके सम्मान में कमी आती गई कारण शिक्षा को कर्तव्य न समझकर सिर्फ पेशा व व्यवसाय समझने की मानसिकता। कुछ समय पहले यह माना जाता था कि शिक्षक पैदा होते हैं उन्हें बनाया नही जा सकता लेकिन इस कथन से अब लोगों का विश्वास हट गया है। अब यह माना जाता है कि जो शिक्षक है और जो नहीं भी हैं उन्हें प्रशिक्षण द्वारा अच्छा शिक्षक बनाया जा सकता है।

अध्यापक शिक्षा से तात्पर्य शिक्षक को शिक्षा कौशलों अथवा विशिष्ट शिक्षक व्यवहारों एवं क्रियाओं में कुशल बनाना, शिक्षण–व्यवसाय के प्रति उनमें सकारात्मक मानसिक अवस्था या स्थिति उत्पन्न करना तथा सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education):–अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य को हम उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में वर्णित विभिन्न व्यक्तियों, समिति, संस्था एवं आयोग के संस्तुतियों एवं सुझाव द्वारा समझ सकते है–

अध्यापक शिक्षा उद्देश्यपूर्ण प्रणाली है जिसका मुख्य उद्देश्य समान उपयोगी प्रभावशाली अध्यापकों को तैयार करना है जिन्हें–

1. सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक तत्वों का पूर्ण रूप से ज्ञान हो।
2. विषय वस्तु की योजना बनाने की योग्यता हो ।
3. शैक्षिक संसाधनों के निर्माण एवं उनके उपयोग करने की योग्यता हो।
4. छात्रों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने योग्य हों।
5. कक्षा प्रबन्धन, विषय ज्ञान तथा बाल मनोविज्ञान का स्थान हो।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) में वर्णित शिक्षक–शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education as by University Education Commission):–आयोग में कहा गया है कि अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करते समय अध्यापक के निर्माण पर अधिक बल देना चाहिए। अच्छा अध्यापक वही है जो अपने कार्य तथा उद्देश्यों के प्रति सजग हो, एक अच्छे शिक्षक का निर्माण ही राधाकृष्णन आयोग का उद्देश्य था। अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों के संदर्भ में डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा है–"अध्यापक का समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं का हस्तांतरण करता है। प्रविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के द्वीप को आलोकित करता है।"

कोठारी आयोग(1964–66)(Kathari Commission) :–शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि–"शिक्षक शिक्षा को शिक्षा के विकास की कुंजी मानना चाहिए। शिक्षण में गुणात्मक सुधार के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि समुचित कार्यक्रम हो।" आयोग ने निम्नलिखित उद्देश्यों पर बल दिया–

1. शिक्षा को पहली तथा दूसरी डिग्री में ऐच्छिक विषय के रूप में लागू किया जाये।
2. विशेष विषयों जैसे–कला, शरीर शिक्षा आदि में पृथकता को दूर किया जाये।
3. ट्रेनिंग कालेजों को विश्वविद्यालयों के कालेजों के स्तर तक ले जाया जाये।
4. अंशकालीन शिक्षा की उचित व्यवस्था की जाये।
5. राज्य स्तर पर स्टेट बोर्ड ऑफ एजूकेशन की स्थापना हो।
6. सेकेण्ड्ररी पास व्यक्तियों के प्रशिक्षण का समय दो वर्ष हो, स्नातकों के लिए एक वर्ष का समय हो।
7. प्रशिक्षण विद्यालयों तथा स्कूलों के मध्य खाई को पाटने के लिए हर प्रशिक्षण विद्यालय में प्री–प्राइमरी, प्राइमरी, सेकेण्ड्ररी स्तर पर प्रसार सेवा विभाग खोले जायेंगे।
8. समाज में समाजिक परिवर्तन के लिए अध्यापक की उत्तरदायी भूमिका के प्रत्यक्षीकरण को सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करना।

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद NCTE के अनुसार शिक्षक–शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education-Education According to NCTE) :–

1. शिक्षक स्कूल और समाज के मध्य एक कड़ी का कार्य करें।
2. अद्यिगम और शिक्षण के सर्वमान्य सिद्धान्तों के अनुरूप शिक्षक शिक्षण कर सकें।
3. शिक्षक–शिक्षा, शिक्षकों में गांधीवादी मूल्यों का विकास करें।
4. इस शिक्षा के द्वारा शिक्षकों में ऐसे गुण का विकास हो जिससे वे समाज में परिवर्तन लाने में सहायक हों।
5. शिक्षक समाज का सही मार्गदर्शक बन सकें।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द के मत में अध्यापक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य (Aims of Teacher Education as by Dr. Sammpurnananda) :–"राष्ट्र को अध्यापक की भावनाओं एवं कठिनाइयों का अनुभव होना चाहिए। उनसे यह भी आशा की जा सकती है कि वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में योग्य एवं चरित्रवान नेता प्रदान करें जबकि वे स्वयं उन दशाओं में रहते हैं जिनसे वे अपनी कुशलता एवं आत्मसम्मान को बनाये नहीं रख सकते।"

(i)–प्राचीन काल में शिक्षक शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education in Ancient Time) :–भारतीय संस्कृति का विकस एक सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली द्वारा हुआ है। प्राचीन काल में अध्यापकों के लिए किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नही थी। उनका ज्ञान, आचरण और अनुभव ही शिक्षक बनने के लिए पर्याप्त था। प्राचीन काल अथवा पूर्व बौद्धकाल में शिक्षकों को शिक्षा देने अथवा प्रशिक्षण प्रदान करने वाली कोई औपचारिक संस्था नहीं थी।

(ii)–बौद्धाकाल में अध्यापक शिक्षा का उद्देश्य (Aims of Teacher Education in Buddhist Period) :–अध्यापक शिक्षा की औपचारिक रूपरेखा का शुभारम्भ बुद्धकाल में ही हुआ। इस शिक्षा की विधि साधारण थी, संघ में वरिष्ठ और श्रेष्ठ छात्र अध्ययन–अध्यापन कार्य में आचार्यों या पित्रुलाचार्य अथवा सहायक शिक्षक कहते थे। इस व्यवस्था को अग्र शिष्य प्रणाली या मोनोटोरियल व्यवस्था कहा गया।

(iii)–मुस्लिम काल में अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education in Muslim Period) :–इस समय अध्यापक शिक्षा के विशेष प्रमाण नहीं मिलते। शिक्षा को जनता तक पहुँचाने के लिए मकतब और मदरसे थे। जिनमें किसी भी पद पर नियुक्ति के लिए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी।

(iv)–NCERT के द्वारा अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education by NCERT) :–राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के द्वारा सत्र तैयार किये गये Teacher Education curriculum: A Fram.

(v)–ब्रिटिश काल में अध्यापक शिक्षा(Aims of Teacher Education in British period) :–डैनिस और ब्रिटिश संयुक्त प्रयास के अन्तर्गत कैरी साहब ने अपने सहयोगी मार्शमैन और वार्ड के साथ सन् 1793 में सबसे पहले बंगाल के सेरामपुर नामक स्थान में एक औपचारिक अध्यापकीय प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना को जिसे नार्मल स्कूल के रूप में जाना गया।

अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सन् 1819 ई0 में बंगाल के कलकत्ता स्कूल सोसायटी, 1823 में नैटिव एजूकेशनल सोसायटी कलकत्ता तथा बम्बई में इसी प्रकार के शिक्षण प्रशिक्षण नार्मल स्कूल खोले गये।

भारतीय शिक्षा आयोग (1882)(Indian Education Commission) :–हंटर कमीशन का अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में निम्न उद्देश्य था–

–प्रशिक्षण संस्थाओं का विस्तार।

–शिक्षक प्रशिक्षण में गुणवत्ता।

अध्यापक शिक्षा के सामान्य उद्देश्य (General Aims of Teacher Education) :–

–जीवन पर्यन्त अधिगम प्रवृति का विकास जिससे शिक्षक का सम्पूर्ण विकास सम्भव है।

–सम्प्रेषण कौशल का विकास जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सरल सहज तथा सुलभ बनाती है।

–योग्य शिक्षकों का निर्माण।

–राष्ट्रीय मूल्यों और लक्ष्यों को विकसित एवं शिक्षण–अधिगम में समाहित योग्य बनाना।

–अध्यापक को नवीन तकनीक से परीचित कराना।

–प्रबन्धन कौशल विकसित करने के लिए।

–सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक कौशल विकसित करना।

–छात्रों का सम्पूर्ण विकास कर सके इस योग्य बनाना।

–गुणवत्ता युक्त अध्यापकों की प्राप्ति।

–शैक्षिक पुर्निर्माण।

–गुणात्मक सुधार।

–आदर्श नागरिक बनाने के लिए आदर्श शिक्षक विकसित करना।

–राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान।

–सांस्कृतिक हस्तान्तरण, उन्नयन एवं विकास करने योग्य बनाना।

–वैयक्तिक भिन्नता व बाल विकास की अवस्थाओं का ज्ञान।

–विद्यालय के औपचारिक माहौल को आत्मसात करने योग्य बनाना।

–मूल्यों का विकास।

–शिक्षकों को शिक्षा और शिक्षण के मूल आधारों का ज्ञान कराना, उनमें शिक्षा और शिक्षण के प्रति अन्तर्दृष्टि का विकास करना।

–राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका का ज्ञान।

–विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करना।

–शिक्षकों को कक्षा नियंत्रण और विद्यालय संगठन की क्रियाओं में दक्ष करना।

–शैक्षिक समस्याओं को समझना एवं उसे दूर करने योग्य बनाना।

–जीवन के उद्देश्य का ज्ञान कराना।

–कक्ष अनुशासन और विद्यालय अनुशासन की क्रिया में दक्ष करना।

–अपने राष्ट्र के प्रति दायित्वों को समझने एवं उसे पूर्ण करने की योग्यता विकसित करना।

–शिक्षा की दार्शिनिक, समाज शास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का ज्ञान कराना।

–छात्र निर्देशन व परामर्श की क्षमता का विकास करना।

NCERT के द्वारा अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Teacher Education by NCERT) :– NCERT के द्वारा सन् 1978 में तैयार किये गये Teacher Education Curriculum: A Framework में अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य निम्न थे–

–वातावरणीय संसाधनों का प्रयोग तथा उनका एवं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करना सिखाना।

–छात्रों एवं उनकी समस्याओं के प्रति धनात्मक दृष्टिकोंण उत्पन्न करना। निर्देशन व समुपदेशन के कौशल का विकास करना।

–विषयवस्तु के नवीनतम ज्ञान तथा पढ़ाने को नवीनतम तकनीको का ज्ञान करना।

–क्रियात्मक अनुसंधान तथा अन्वेषणात्मक प्रोजेक्टों का आयोजन करना सिखाना।

–भारतीय सन्दर्भ में शिक्षा के उद्देश्यों का बोध कराना।

–गाँधीवादी मूल्य जैसे सत्य, अहिंसा, स्वानुशासन, श्रम, निष्ठा आदि का विकास करना।

–सामाजिक परिवर्तन लाने में अध्यापकों की अहम भूमिका का ज्ञान कराना।

अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व (Needs and Significance of Teacher Education) :–पुरानी विचारधारा के अनुसार अध्यापक जन्म लेते है या जन्म से होते हैं बनाये नहीं जाते अगर इस विचारधारा को मान भी ले तो बहुत कम व्यक्ति हैं जिनमें जन्म से शिक्षण योग्यता होगी। और आज के परिवेश और हमारी जनसंख्या को देखते हुए हमारी आवश्यकता अधिक है और यह आवश्यकता अध्यापक शिक्षा से पूरी हो सकती है। जिससे प्रशिक्षण देकर उन्हें शिक्षण योग्य बनाया जा सके। अध्यापन एक कला है। यह कला विशेष प्रशिक्षण द्वारा ही सीखी जा सकती है।एक शिक्षक का बहुमुखी दायित्व होता है और उसको कुशलतापूर्वक निभाने के लिए प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। पहले केवल विषय–विशेष की निपुणता ही अध्यापन कार्य के लिए पर्याप्त थी, परन्तु आज बाल मनोविज्ञान के बढ़ते हुए ज्ञान तथा शिक्षण विज्ञान के विकास के कारण यह धारणा बदल चुकी है। अब यह धारणा बन चुकी है कि प्रशिक्षण के बिना अध्यापक अपना कार्य कुशलतापूर्वक नहीं कर सकता। आज शिक्षण को विशेष कार्य समझा जाता है और इस कार्य को कुशलतापूर्वक करने के लिए विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है–

1. बाल मनोविज्ञान का ज्ञान–

एक शिक्षित अध्यापक अपने विषय का पूर्ण ज्ञान रखता है, परन्तु शिक्षण इस बात की मांग भी करता है कि शिक्षक को अपने विषय के साथ–साथ अपने छात्र–छात्राओं के बारे में भी पूरी जानकारी होनी चाहिए। उसे बालक की विभिन्न विकास अवस्थाओं की आवश्यकताओं का ज्ञान होना चाहिए। उसे बच्चे को समायोजन में सहायता प्रदान करनी चाहिए। उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि–

I. बच्चा किस प्रकार सीखता है?
II. बच्चे को सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए?
III. मानसिक कुण्ठाओं के निर्माण से किस प्रकार बचना चाहिए?
IV. सीखने की प्रक्रिया में सहायक साधन कौन से हैं?
V. बुनियादी इच्छाओं के उदात्तीकरण (sublimation) के लिए किस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिए?
VI. स्वस्थ एवं सन्तुलित व्यक्तित्व के निर्माण के लिए किन प्रक्रियाओं को गठित करना चाहिए आदि ।

एक अप्रशिक्षित अध्यापक इस व्यापक दायित्व को कुशलतापूर्वक नहीं निभा सकता। इन कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने की योग्यता तथा क्षमता प्राप्त करने के लिए अध्यापक – प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

2. सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का ज्ञान–

'अध्यापक–शिक्षा' के दौरान अध्यापकों को सीखने और सिखाने की विविध शैलियों तथा क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इससे उसे सामूहिक रूप से अपना कार्य करने में सहायता प्राप्त है। उसे सामूहिक रूप से अपना कार्य करने में सहायता प्राप्त होती है।

3. अध्यापक के विभिन्न गुणों को विकसित करना–

शिक्षण की सफलता के लिए अध्यापक में कुछ शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं भावात्मक योग्यताओं का होना अत्यन्त आवश्यक है।

4. शिक्षण को रोचक बनाना–

अप्रशिक्षित अध्यापकों के हाथ में शिक्षण एक औपचारिक क्रिया बनकर रह जाती है। वे अवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते हैं जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा एक निरर्थक एवं शुष्क प्रक्रिया बनकर रह जाती है। प्रशिक्षण को अध्यापक अपनी कार्य की योग्यता प्रदान करता है जिससे शिक्षण में रोचकता एवं सार्थकता उत्पन्न होती है। प्रशिक्षण द्वारा अध्यापक अपनी प्रतिभा को खोलकर उसका उचित प्रयोग करता है। अध्यापकों के पर्याप्त प्रशिक्षण के बिना शिक्षा के पुनर्निर्माण का कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता।

5. सुनियोजित शिक्षण के लिए आवश्यक–

शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण और सार्थक बनाने के निरन्तर प्रयास हो रहे हैं। इस प्रयास में सफलता तभी प्राप्त हो सकती है जब शिक्षा सुनियोजित हो और शिक्षा को सुनियोजित करने के लिए अध्यापक शिक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

निष्कर्ष (Conclusion) :

किसी भी देश का भविष्य उस देश के अध्यापकों के हाथ में होता है। क्योंकि किसी भी देश का भविष्य उस देश के विद्यार्थि होते हैं और इन विद्यार्थीयों को सही आकार देने का कार्य एक शिक्षक का ही होता है। अगर यह शिक्षक सही सही ढ़ंग से प्रशिक्षत होगा तभी देश के भावी भविष्य का निर्माण कर पायेगा।

कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि किसी भी समाज की सांस्कृतिक दृष्टि का पता उस समाज में अध्यापकों के स्तर से पता चलता है। अध्यापक किसी भी शैक्षिक व्यवस्था की धूरी है। अतः अध्यापको के निर्माण के लिए उचित अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता है।

सन्दर्भ(Reference) :

–डॉ0 सत्य नारायण दूबे, 'शरतेन्दु' 2009, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

–मालती सारस्वत, भारतीय शिक्षा का इतिहास, न्य कैलास प्रकाशन, इलाहाबाद।

–राधामोहन, अध्यापक शिक्षा, पी0एच0आइ0 लर्निगं प्रा0लि0, नई दिल्ली।

–डॉ0 मालती सारस्वत, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समाजिक समस्याएं, आलोक प्रकाशन इलाहाबाद।

–जे0एस0 वालिया, भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, अहीम पाल पब्लिर्शस, जलंधर।